राग और रंग

संगीत में रागों को मूर्त रूप देने का विचार केवल भारत में ही है। यह काफी प्रचलित है। इस विशय का सबसे पहला उल्लेख हमें अद्भुत रामायण में मिलता है, जिसमें नारद मुनि के संगीत ज्ञान के अंहकार को दूर करने के लिए विष्णु जी उन्हें देवलोक में एक स्थान पर अंग–भंग स्त्री–पुरूषों को रोते–बिलखते हुआ दिखाते हैं। उनके दुःखी होने का कारण पूछने पर उन्हें बताया जाता है कि वे महादेव जी द्वारा उत्पन्न राग–रागनियॉ हैं। नारद मुनि ने जो संगीत नही जानते उन्हें इस लापरवाही से गाया है कि वे छिन्न–भिन्न हो गए हैं। इस आधार पर लोगों ने यह अनुमान किया है कि रागों के रूप दो प्रकार के हैं। इनमें एक तो 'नादात्मक' है ओर दूसरा 'देवमय'। यही बात सन् 1609 में लिखे गए "राग विबोध" ग्रन्थ से भी है। इसके लेखक सोमनाथ का कहना है कि "नादात्मक" रूप अनेक प्रकार के हो सकते हैं, किन्तु "देवमय" रूप एक प्रकार का ही होता है। फिर सन् 1625 ई0 में लिखे गए ग्रन्थ "राग दर्पण" में भी राग रूपों को दिया गया है। इसके उपरान्त और भी विद्वानों ने जैसे "संगीत परिजात" में, तथा अनेक "राग मालाओं" में एवं इसी शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गयी पन्नालाल– चुन्नीलाल गुसांई की "नाद विनोद" में भी राग रूपों का वर्णन पाया जाता है।

अब राग में जो चित्र प्राप्त होते हैं उन्हें यदि देखा जाए तो यह दो प्रकार के मिलते हैं। कुछ काले और कुछ सफेद रंग के है। और कुछ रंगीन हैं। आज का विषय है "राग ओर रंग" राग स्वरों से बनते हैं। तो आइए पहले इस पर विचार करें कि "रंग" क्या है? अनेक संगीत ग्रन्थों में जो स्वरों के रंग बताए गए हैं उनमें से "संगीत रत्नाकर" में सा का रंग रक्त, रे का पिंजर (पिंजर शब्द का अर्थ संगीत पारिजात में ताल वृक्ष जैसे हरे वर्ण को बताया है। जबकि हिन्दी –प्रचारक पुस्तकालय के "हिन्दी शब्द–कोश"में इसे पीले और लाल रंगका मिश्रण बताया हैं) अब इसे हरा समझा जाए या नारंगी, कुछ नही कहा जा सकता। गा का स्वर्ण जैसा, मा का कुन्द अर्थात् भवेत कुमोदनी या भवेत कनेर के पुष्प जैसा सफेद। पा का कृ ण अर्थात् काला, धा का पीत अर्थात् पीला और नी को मिश्रित रगों का बताया गया है।

"संगीत पारिजात" में सा का रंग गुलाबी, जबकि संगीत रत्नाकर में इसे लाल कहा है, रे का पिंजर (इसकी व्याख्या नहीं की है कि पिंजर के अर्थ क्या हैं?) गा का स्वर्ण जैसा, मा का कुन्द, गा का काला, धा का पीला और नि का करबुर बतलाया गया है। करबुर का अर्थ चितकबरे से है, अर्थात जिसमें काले, पीले, बैंगनी, लाल जैसे अनेक रंगों के धब्बे हो, उसे करबुर कहा जाता है।

जबकि शाहिन्दा (आतिया बेग़म फैजी) ने अपनी पुस्तक में "इण्डियन म्युजिक" जो सन् 1914 ई0 में लन्दन में लिखी है, इसमें सा का रंग गुलाबी, रे का पीलापन लिए हरा, गा का नारंगी, मा का पीलाई लिए गुलाबी, पा का लाल और नि का काला बताया है।

अब यदि प्रकृति की ओर देखें तो हमें इन्द्र–धनुष के द्वारा सात रंग ही दिखायी देते हैं। इनमें लाल प्रारम्भ में है और अन्त में बैंगनी। बैंगनी के बाद रंगों का पुनः यही क्रम दिखायी देता है। इस प्रकार इन्द्र–धनुष के रंगों का क्रम लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, गहरा नीला और बैंगनी है। अंग्रेजी भाषा में इन रंगों के नाम क्रम से Red, Orange, Yellow, Green Blue, Indigo, Violet हैं। रंगों के इस क्रम को याद करने के लिए यदि प्रत्येक रंग के नाम का प्रथम अक्षर ले लें तो ROYGBIV बनता है। यह शब्द याद करने में कुछ अटपटा सा लगता है। अतः उन्होंने उल्टी ओर से रंगों के नामके प्रथम अक्षरों को लेकर VIBGYOR शब्द बना लिया। किन्तु मैंने हिन्दी में इस क्रम को सीधा ही रखा है। इस प्रकार मैंने जो शब्द बनाया वह "लानापहिआनीब' है। यहॉ "ला" का अर्थ लाल से है, "ना" का नारंगी से, "पी" का पीले से, "ह" का हरे से, "आ" का आकाश नीले से या हल्के नीले से, "नी" का नीले से और "बैं" का बैंगनी से।

इसमें भी यदि ध्यान से देखा जाए तो मुख्य रंग लाल, पीला और नीला तीन ही हैं। जब लाल व पीला मिला तो नारंगी बन गया। पीला व नीला मिला तो हरा बन गया। नीला व लाल मिला तो बैंगनी बन गया। और जब बैंगनी व नीला मिला तो गहरा नीला सा बन गया। ये कुल सात रंग हुए, जबकि मुख्य रंग तीन ही रहें। अब यदि हम संगीत की ओर देखें तो पाऍगें कि हमारे सप्तक में भी सात स्वर होते है। इनमें भी सा–गा– व पा प्रमुख है। इनको हमने प्रमुख इसलिए माना है कि जब किसी ध्वनि को हम षड्ज मान लेते हैं तो जो उससे स्वयं–भू–नाद उत्पन्न होते हैं, उनमें नवें आवर्तक में चार बार सा, दो बार पा और एक बार गा की ध्वनि उत्पन्न होती है। वैसे नवें आवर्तक में ऋशभ भी आता है किन्तु वह इतना सूक्ष्म हो जाता है कि कठिनाई से ही सुनाई देता है। चारों 'सा' की ध्वनियॉ एक–दूसरे में लीन हो जाती हैं षड्ज–पंचम का मेल इतना अच्छा होता है कि पंचम भी षड्ज में ही छिप जाता है। केवल गान्धार स्वर ही ऐसा होता है जो स्पश्ट सुनाई देता है तो संगीतज्ञ कहते है कि तानपुरा मिल गया। जब षड्ज–गान्धार और पंचम की आन्दोलन संख्याओं का सम्बंध देखा गया तो वह 4:5:6 मिलता है। इतने विवेचन के बाद आइए अब इस पर थोड़ा विचार करें कि हमारे

विद्वानों ने इन रंगों का संगीत में किस प्रकार से प्रयोग किा है। हमें एक पुस्तक "419 इलेट्रेशन ऑफ इण्डियन म्यूजिक एण्ड डांस इन वैस्टर्न, इण्डियन स्टाइल" मिलती है जिसके सम्पादक विद्या साराभाई नवाब हैं। इसके प्रकाशक हैं साराभाई मनिलाल नवाब, माण्डविनी पौल, छीपा मावजिनी पौल, अहमदाबाद–1"। यह जैनियों से सम्बन्धित ग्रन्थ है। इसका मुद्रण सन् 1964 ई0 में हुआ था। इस ग्रन्थ में संगीत सम्बन्धी 419 चित्र हैं। इनमें से 107 संगीत से सम्बन्धित हैं और 312 नृत्य से। इनमें 85 बड़े आकार के पृष्ठों में संगीत व चित्रों का गद्यात्मक वर्णन है। 94 चित्र आर्ट पेपर के पृष्ठों पर छपे हैं। इन चित्रों में स्वरों के, श्रुतियों के, मूर्छानाओं के और तानों के तो चित्र है, परन्तु राग–रागनियों में से किसी का भी चित्र नहीं है। उदाहरण के लिए षड्ज के रूप का वर्णन इस प्रकार है कि षड्ज स्वर का रंग तॉबें की भॉति लाल है। उसके 6 सिर और 4 हाथ हैं। दो हाथों में कमल हैं तथा दो में वीणा है। वाहन मयूर है। दुपट्टे का रंग पीला है। इसमें काले रंग से डिजाइन बना है। नीचे के वस्त्र का रंग आकाश के समान नीला है, जिस पर लाल रंग का डिजाइन है।

अब तनिक कुछ रागों के चित्रों का भी विचार करें। यहॉ उदाहरण के लिए हम मेघ राग को लेते हैं।

मेघ राग का चित्र श्री विष्णुदास शिराली ने अपने ग्रन्थ "सरगम, एन इन्ट्रोडक्शन टू इण्डियन म्यूजिक" में जो सन् 1977 ई0 में छपी थी, में इस प्रकार से है–

चित्र की जमीन हरी है। इसमें एक युवक मुकुट पहने हुए है जिसके शरीर का रंग नीला है, हाथ में वीणा लिए, पीले वस्त्र पहनें, जिसमें दो लाल रंग की चौड़ी पट्टियॉ भी हैं, दिखाया गया है। इसके दोनों ओर दो वृक्ष हैं और इसके बाई तथा दाई ओर एक–एक स्त्री खड़ी है। बाऐं हाथ की ओर जो स्त्री खड़ी है वह मृदंग बजा रही है। इस स्त्री का पाजामा लाल जैसा है और इसके बीच में पीलापन लिए हुए सफेद वस्त्र लटक रहा है। मृदंग भी इसी रंग का है। जबकि सीधे हाथ वाली स्त्री के पाजामा का रंग हरियाली हलए हुए पीला सा है। इसके बीच में लाल रंग का वस्त्र लटक रहा है। इसके हाथों में मजीरे जैसी वस्तु है। यह चित्र राजस्थानी स्कूल बूँदी का सन् 1725 ई0 का है जो प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, बम्बई से लिया गया है।

शाहिदा (बेगम फैजी रहमान) ने अपनी लन्दन में मई 1914 ई0 में छपी "इण्डियन म्यूजिक" में भी मेघ का वर्णन किया है। उनके अनुसार एक सुन्दर किन्तु भयानक आकृति का मनुश्य, जिनके बाल पीछे की ओर ऐसे मुड़े हुए हैं, मानो इनसे साफा बॉध रखा हो, हाथ में नंगी तलवार लिए खड़ा है। इस तलवार को आकाश में घुमाकर मानों बादलों में गुर्राहट और गर्जना पैदा कर रहा हो। आकाश काला और क्रोधित सा है जिसमें बिजली की चमक ओर गड़गड़ाहट अंधकार को चीरती है और वायु भी भयंकर वातावरण उत्पन्न कर रही है। यह चित्र रंगीन न होकर काला है।

इसी प्रकार का वर्णन एक "रागमाला" में, जो फतेहपुर (राजस्थान) में एक ग्राम के निवासी रावत ओम् प्रकाश सिंह जी के यहॉ से प्राप्त हुई, में मिलता है। इसे गोविन्द नाम के व्यक्ति ने लिखा है। ग्रियर्सन ने इसे सन् 1791–93 ई0 का माना है। इसमें 12"x8"के 36 चित्र हैं। प्रत्येक राग–रागिनी का वर्णन चतुष्पदी अथवा सवैया कविता में है। भैरवी का वर्णन निम्न प्रकार है–

फूले कमल सरोवर मध्य, मन्दिर सेतु सुहावतु है।
सुन्दर रूप श्रृंगार किए हु, गावत ताल बजावत है।
ध्यान धरे सिव को जिव में, यह फूल सुगन्ध चढ़ावत है।
गोविंद कहे यह भैंरों की रागिनी, भैरवी नॉव कहावत है।

इन विवरणों से आपको राग–रागिनियों के चित्रों में रंग और आकृति का साम्य व भेद स्पष्ट हो गया होगा।

इन समस्त बातों पर विचार करने पर हम इस निष्कर्श पर पहुँचते हैं कि "राग और रंग" का कोई भी एक सर्वमान्य सम्बन्ध नहीं हैं। यदि यह संबन्ध होता तो ग्रन्थों में स्वरों के रंग न तो भिन्न होते और न क्रम–रहित। क्रम–रहित कहने से हमार अभिप्राय यह है कि रत्नाकर में गा के स्वर्ण और पा के काले के मध्य में माका भवेत रंग नहीं होता। यही स्थित परिजात में भी है। जबकि भाहिदा बेग़म फैजी रहमान ने पा का रंग लाल और नि का काला बताया है। यदि इसका क्रम इन्द्रधनुष के रंगों के क्रम में होता तो कुछ मान्य भी था।

दूसरे यदि रागों के देवमय रूपों की ओर ध्यान दे तो इनमें भी समानता नहीं है। जैसा कि मेघ और भैरवी रागों के चित्रों से स्पष्ट है। इससें भी अधिक विचारणीय बात यह है कि यदि रागों के देवमय रूपों में किसी तरह की समानता भी होती तो एक विद्वान केदारी को स्त्री और दूसरा विद्वान पुरूष रूप में नही देखता। तीसरे, यदि स्वरों के आधार पर ही रागों के रूपों का निर्माण किया जाता तो फिर, तालों के चित्र, जहॉ स्वर हैं ही नहीं, उनके रूप कैसे बनाये गए? संगीत विद्वानों को यदि स्वरों के रगों को ही देना ही था तो वे साथ के स्थान पर बारह स्वरों के बारह भिन्न रंग देते।

हॉ यदि कोई समानता दिखाई देती है कि केवल इतनी सी कि संगीत में भी मुख्यस्वर सात हैं और प्रकृति में इन्द्रधनुष के भी सात रंग हैं। दूसरी समानता यह भी है कि रंग अरैर ध्वनि दोनों ही एक प्रकार के आन्दोलन हैं। फिर प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यदि राग और रंग में कोई समानता नहीं है तो विद्वानों से इसकी कल्पना ही क्यों की? इसका सीधा सा उत्तर यह है कि जब "स्थूल शरीर पर ध्वनि का प्रभाव" तथा "ध्वनि और रंग" के रहस्य का अध्ययन किया जाएगा, तो इसका कारण स्वतः समझ में आ जायेगा।

डॉ० अनिता रानी
असिस्टेन्ट प्रोफेसरः संगीत सितार
श्रीमती वी0डी0 जैन गर्ल्स पी0जी0 कालेज,
आगरा